

मुख्य परीक्षा  
02009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल मु.पु. 24 पृष्ठ  
कार्यालयीन उपयोग के लिए निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।



परीक्षा के नाम की सील

हायर सेकेण्डरी परीक्षा

- 1. विषय कोड 001 परीक्षा का विषय हिन्दी
- 2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12-3-09

केन्द्र क्रमांक की सील  
11002

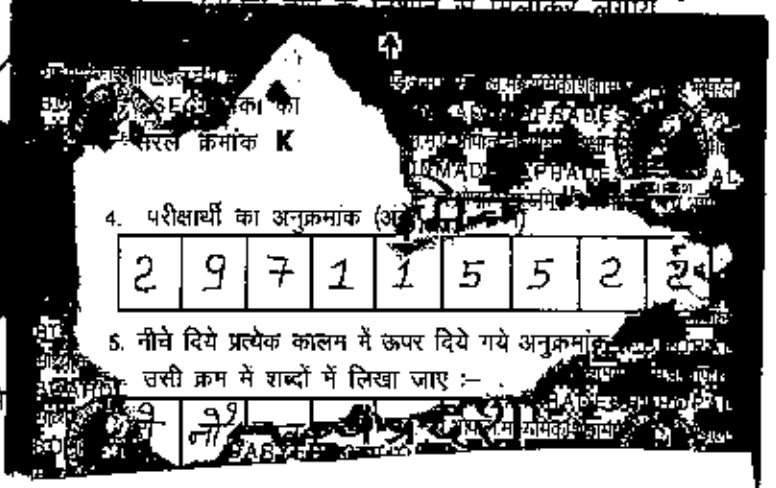
- 3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें कोड सेट U-2001 B

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्न उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में एक अंक

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था के क्रमांक 04 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।



B  
S  
E  
M  
P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) S. R. Tiwari

नाम Smt S. R. Tiwari पद M.P.S.

पता/संस्था M.L.B.

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुर उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

Shrivastava

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकायें स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक

हस्ताक्षर (परीक्षक) [Signature]

परीक्षक क्रमांक [Box]

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक.....

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक.....

### परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छ	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

### परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

### मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

जुल अंक



उत्तर = 1

रिक्त स्थानों की पूर्ति

(i) मीराबाई कृष्णभावते शास्त्रा की कवियत्री हैं।

(ii) वाणेश जी को सबसे पहले पूजा जाता है।

(iii) कबीर को "हृदयहीन कवि" कहा जाता है।

(iv) बलदास श्रीकृष्ण को चिढ़ा-चिढ़ाकर परेशान करते हैं।

(v) भूबदास वात्सल्य के कुशल चित्त हैं।

उत्तर = 2

सही विकल्प

1. आने वाली विपत्ती का पूर्ण निश्चय होता है:

उत्तर असम्भावना में

2. राजाधर बाबू ने भोजन बनाने की जिम्मेदारी सौंपी थी:

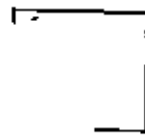
उत्तर बसंती और बहू को

B  
S  
E  
M  
I



पृष्ठ के अंकों का योग

4



पृष्ठ

+



पृष्ठ 4 के अंक

=



कुल अंक



(3) नए महमान आये हैं:

उत्तर  $\Rightarrow$  विजयौर से

(4) सभी विषयों पर बोलने वालों को कहा जाता है:

उत्तर  $\Rightarrow$  रैडीमैड अध्यक्ष

(5) हमारी स्मृति में स्थायी होते हैं:

उत्तर  $\Rightarrow$  बचपन के अनुभव

उत्तर  $\Rightarrow$  3

सत्य / असत्य

1. केशवदास भावुकाल के <sup>प्रमुख</sup> कवि हैं।

उत्तर  $\Rightarrow$  असत्य

(2) धनानंद शीतलसेह कवि हैं।

उत्तर  $\Rightarrow$  सत्य

(3) वीर रस का स्थिति भाव क्रोध होता है।

उत्तर  $\Rightarrow$  असत्य

(4) मीराबाई रामभाक्ते शाववा की प्रमुख कविधारी हैं।

उत्तर  $\Rightarrow$  असत्य

B  
S  
E  
M  
P

5

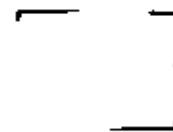
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 5 के अंक

=



कुल अंक



(5) जहाँ कारण के न रहते हुए भी कार्य ही जाता है, वहाँ विभावना अंलकार होता है।  
उत्तर ⇒ सत्य

उत्तर = 4

सही जोड़ी ⇒

B  
S  
E  
M  
P

(अ)

सही उत्तर

(1) कठिन काल्य का मृत  
कहा गया है।

केशवदास

(2) हमें आशीर्हित या  
असमर्थ बताने वाले  
लौका है।

पार्श्वमी देश

(3) "बढ़ारीपही" कविता  
के रचयिता है।

विष्णुकान्त शास्त्री

(4) सुकोनी की सामर्थ्य  
है।

वीर

(5) "पल्लव वसना"  
कहा गया है।

भूखी डाली

पृष्ठ के अंकों का योग

6

$$\boxed{3} + \boxed{2} = \boxed{5}$$

पृष्ठ                      पृष्ठ 6 के अंक                      कुल अंक



उत्तर ⇒ 5

एक वाक्य में उत्तर ⇒

(1) "तीमीर गीह में किरण आचरण" लालिल निबन्ध  
के लेखक कौन हैं?

उत्तर ⇒ डॉ. श्याम सुंदर कुर्वे

(2) ब्रुवहास के पदों की भाषा कौन सी है?

उत्तर ⇒ ब्रजभाषा

(3) राजाधर बाबू के लिए मधुर संगीत क्या थी?

उत्तर ⇒ पटरियों पर चलने वाली टूनों की खट-खट

(4) "गाय ककूणा की कविता है" यह कथन  
किसका है?

उत्तर ⇒ महात्मा गाँधी

(5) गौरा की गुड़ में खुई लपेट कर किसने  
खरीदाई?

उत्तर ⇒ तवाल ने



### उत्तर: 6 (ब)

बीती विभावरी जाग रही,  
 अम्बर पनघट में डुबी रही,  
 तारा घट अषा नागरी,  
 किसलय का अंचल डोल रहा,  
 लो लालिका भी भर लाई,  
 मधु मुकुल नव रस नागरी।

विभावरी अर्थात् रात्रि के बीत जाने पर  
 एक सरवी अपनी दूसरी सरवी से कहती  
 है कि रात्रि बीत चुकी है और अषा रूपी  
 रानी अम्बर रूपी पनघट में तारे रूपी  
 घट डुबी रही है। यहाँ पृकृति पर मानवीकरण  
 अंकार आरोपित किया गया है। यहाँ पर  
 हात-काल-रमाणीयों के घड़े लेकर नदी से  
 पानी भरने का दृश्य चित्रित किया गया  
 है। पक्षी हात-दोत ही चटकने लगते हैं  
 और सुगन्धित समीर के बहने से किसलय  
 प्रसन्नता से इधर-उधर डोल रही है और  
 लता भी अपने पुष्प रूपी घड़े में रस  
 भरकर ले आई है।

B  
S  
E  
M  
P



उत्तर 7 (ब)

“ हम तुम बहुत पुरानी साथी  
 दोनो तन-मन से कोमल,  
 दोनो में है यौवन और आकर्षण,  
 दोनो कल सुरक्षा जाएंगी,  
 करके लग भर मधु वर्षण  
 देवी मालिन मुझे न तोड़ी।”

फूल मालिन से कहता है कि मालिन मुझे  
 मत तोड़ी। हम-तुम बहुत पुरानी साथी हैं।  
 हम दोनो तन मन से कोमल हैं। तुम  
 वृष्ट में और मैं उपवन में फल फूल  
 रहा हूँ। हम दोनो में यौवन और आकर्षण  
 है। मैं इस वांशार में और आधिक समय  
 तक जीवित रहकर अपनी मधु और सुगंध  
 संसार को अर्पण करना चाहता हूँ। जब फूल  
 संसार को अपना समस्त मधु और  
 सौन्दर्य अर्पण कर देगा तब फूल सुरक्षा  
 जाएगा। मालिन स्वामी चेतना जन-जन के मन  
 से प्रेम एकाग्रित करके जब प्रेम अर्पण  
 कर देगी तब मालिन भी सुरक्षा जाएगी।  
 फूल और मालिन अपना यौवन और आकर्षण  
 का मधुवर्षण कर सुरक्षा जाएंगे। फूल और  
 मालिन दोनो का जीवन परांपकारी है।

B  
S  
E  
M  
P



उत्तर 8 (अ)

प्रयोगवादी कविता 1943 में आचीदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" के नैतृत्व में एक आंदोलनकारी लहर उठी जो प्रयोगवादी कविता के नाम से जानी जाती है। 1943 में अज्ञेय के संपादन में तारसप्तक का प्रकाशन हुआ जिसने प्रयोगवाद का स्वरूप स्पष्ट कर

दिया। उसके बाद 1951 में द्वितीय तारसप्तक प्रकाशित हुआ जिसमें प्रयोगवादी लेखक (1) अज्ञेय 2) नदी के द्वीप (2) मुक्तिबोध 3) चौह का मुँह टूटा है, इन्द्रधनुष बंद हुए।

प्रयोगवादी कविता की विशेषताएँ 1)

प्रयोगवादी कविता की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं 1)

(1) व्याक्तिवाद की प्रधानता 2) प्रयोगवादी कविता में

व्याक्तिवाद की प्रधानता विद्यमान है, इसमें व्यक्ति को अधिक महत्व दिया गया है।

(2) सरस भाषा शैली 3) प्रयोगवादी कविता में सरस भाषा शैली अपनाई

जाने के कारण रचनाएँ आसानी से समझ आती हैं।

(3) नारी के प्रति नवीन भावना 4) प्रयोगवादी कविता में नारी के प्रति

नवीन भावना का चित्रण किया गया है।

(4) प्रकृति चित्रण 5) इस कविता में प्रकृति के सौन्दर्य का भी चित्रण किया गया है।

B  
S  
E  
M  
P

10

$$\left[ \begin{array}{c} \text{ } \\ \text{ } \end{array} \right] + \left[ \text{ } \right] = \left[ \text{ } \right]$$

या

ख

पृष्ठ 10 के अंक

कुल अंक



(5) कठोरता व कुरीतियों पर समावृत्त प्राचीन समय से चली आ रही कठोरता व कुरीतियों का इस कविता द्वारा विरोध किया गया है।

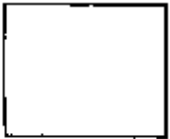
(6) निराशावादिता  $\Rightarrow$  प्रयोगवादी कविता में कठोरता में निराशावाद की प्रवृत्ति पाई जाती थी जिसका समावृत्त उनकी रचनाओं में भी देवर्ण की मिलता है।

उत्तर  $\Rightarrow$  9 (अ)

हिन्दी में 'उपन्यास सम्राट' प्रेमचन्द्र जी को कहा जाता है। प्रेमचन्द्र जी द्वारा उत्कृष्ट कौटुंबिक उपन्यासों की रचना की है जो हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। प्रेमचन्द्र द्वारा रचित उपन्यासों में ग्रामीण जीवन, परिवेश व कुरीतियों की प्रधानता है। उपन्यास के आतिथिक प्रेमचन्द्र जी ने निबंध, नाटक, कहानी की भी रचना की है। उपन्यास सम्राट द्वारा रचित उपन्यासों के नाम

1. गोदान
2. राखन
3. संवसदन
4. निर्मला

B  
S  
E  
M  
D



पृष्ठ के अंकों का योग

(11)

य पृष्ठ

+



पृष्ठ 11 के अंक

कुल अंक



उत्तर = 10 (व)

ताप पिघलने से तापय है विरह जन्य दुःखों का कम होना। मति के वियोग का दुःख कभी कम नहीं होता है चाहे विरही मकरस्थल की रागी में रहे या हिमालय की शीतलता में। विरह की आग्ने की तपन की रागी हमेशा एक समान रहती है। यशोधरा का विरह वियोग हर पल हर स्थान पर एक समान रहता है। कुछ समय के लिए यह कम हुआ लगता है पर वास्तव में होता नहीं है। हिमालय की तराई में अर्थात् सदा भर वातावरण में रहने पर भी यशोधरा का ताप कम नहीं होता है। गौतम से विरह की आग्ने उनके हृदय में हमेशा जलती रहती है। लक्ष्मण की विरहिणी अमिला ने भी ऐसा ही अनुभव किया था। इसलिए लेखक डॉ. बघुवीर सिंह ने लिखा है कि हिमालय की ढाँह में रहकर भी यशोधरा का ताप पिघलता नहीं है।

B  
S  
E  
M  
P

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर 7 (ब)

श्रीकृष्ण की बॉसुरी की टैर सुनकर देवकी की  
 को ऐसा अनुभव होता है मानो वह  
 कारागार से निकलकर एक अलग दुनिया में  
 पहुँच गई है। जहाँ बहुत प्रकाश है, चारों  
 तरफ हरियाली और प्राकृतिक सौन्दर्य है।  
 गाय घास चर रही है और उनके बीच  
 श्रीकृष्ण बॉसुरी बजा रहे हैं। बॉसुरी  
 की टैर सुनकर उन्हें ऐसा लगता है  
 कि वह इस लोक परलोक से ऊपर  
 उठ गई है। वह अपनी अंदर असीम  
 शांति व सुख का अनुभव कर रही है।  
 वह अपनी कल्पना की दुनिया में पूरी  
 तरह से डूब गई थी उस दुनिया में  
 न तो उन्हें कंस का भय था और  
 न ही कृष्ण से विरह का दुःख। क्योंकि  
 उस दुनिया में उनका प्रिय पुत्र कृष्ण उनके  
 सामने बैठकर बॉसुरी बजा रहा था।  
 वह उसे वात्सल्य से भरी झुँड़ ममता  
 से निहारती है उनके साथ खिलती है।  
 उन्हें गौदी में बिठाकर पुचकारती है।  
 श्रीकृष्ण की बॉसुरी की टैर में एक अजीब  
 सा आकर्षण है जो देवकी को अपने  
 पास बुला रहा है।

B  
S  
E  
M  
P

13

पृष्ठ 13 के अंक

कुल अंक

कुल अंक



उत्तर  $\Rightarrow$  12 (अ)

शांत रस की परिभाषा  $\Rightarrow$

सदृश्य के हृदय में स्थित निर्वेद स्थायी भाव का जब संचारी भाव, विभाव और अनुभाव से संयोग हो जाता है तब शांत रस की उत्पत्ति होती है। शांत रस का स्थायी भाव निर्वेद है, जिसका आशय - है वांछारिक भाव से विराक्ती, ईश्वर की आवाधना और अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम। भाक्ती भाव से परिपूर्ण काव्य में शांत रस पाया जाता है। शांत रस शांति का प्रतीक होता है इसमें आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है। शांत रस का उदाहरण  $\Rightarrow$

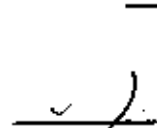
जा दिन मन पक्षी उड़ि जैह  
 ता दिन तरे तन तरुवर के सब पात झरि जैह,  
 या दैही को चरबन करिये, स्थार कावा  
 गीध खैह।

व्याख्या  $\Rightarrow$  कहा गया है कि जिस दिन मन पक्षी बनकर उड़ जाएगा उस दिन तन रूपी तरुवर के सभी पत्तें झर जाएंगी। हमें इस दैह को गंवि नहीं करना चाहिए क्योंकि मरने के पश्चात् इस दैह को स्थार, काना मिल जाएगी।

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग



उत्तर ⇒ 13 (1)

(अ) मुदावरी का वाक्य प्रयोग

(i) आँखों का तारा ⇒ बहुत प्रिय होना  
वाक्य ⇒ प्रियणा अपने माता-पिता की आँखों का तारा हैं।

(ii) अँधी की लाठी ⇒ एक मात्र सहारा  
वाक्य ⇒ राम अपने माँ-बाप का एकमात्र सहारा हैं इसलिए लोग कहते हैं राम अँधी की लाठी हैं।

(ब) मध्य प्रदेश में बोली जाने वाली बोलियों का क्षेत्र ⇒

बुंदेली ⇒ शिवा, सतना, शहडोल व बालाघाट क्षेत्र इस बोली के अन्तर्गत आते हैं।

मालवी ⇒ यह मालवा के पठार में बोली जाती है। इसलिए इसे मालवी कहते हैं। यह इन्दौर, उज्जैन और देवास में भी बोली जाती है।



उत्तर 14

लेखक परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

वचनाएँ ⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी की  
वचनाएँ निर्गल हैं -

रस मीमांसा,

हिन्दी साहित्य का इतिहास

भाषा ⇒ शुक्ल जी की भाषा प्रांठ, परिष्कृत साहित्यिक,  
खड़ी बोली है। उनकी भाषा में  
शोषित व सजीवता है। वाक्य विन्यास कुछ  
लम्बे हैं। मुहावरों व कटावतों का प्रयोग किया  
जाया है। शुक्ल जी की भाषा में गंभीर विवेचन  
की अपूर्व शक्ति है। शुक्ल जी की भाषा में  
कहीं भी शीथिलता देखने को नहीं मिलती है।

शैली ⇒ शुक्ल जी अपनी शैली के रवयं  
निर्माता थे। उनकी शैली व्यास दो  
प्राश्न्य होकर समास शैली तक जाती है।  
एक वाक्य को सूत्र के रूप में कहकर  
फिर उसकी व्याख्या कर देते थे। भावात्मक,  
वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विवेचनात्मक शुक्ल जी  
की शैलियों के प्रकार हैं जिसके द्वारा उन्होंने

B  
S  
E  
M  
P

16

पृ. २५ पृ०

+



=



पृष्ठ 16 के अंक

कुल अंक



(वा) साहित्य में स्थान  $\Rightarrow$  आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य में वही स्थान है जो रामचरितमानस में राम जी का है। अर्थात् शुक्ल जी का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। उनके द्वारा रचित रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि हैं। गद्य की सार्वकाल युगा में शुक्ल युग सबसे महत्वपूर्ण है जो इन्दी के नाम पर रखा गया है।

उत्तर  $\Rightarrow$  15

कावे परिचय

सूरदास

(क) रचनाएँ  $\Rightarrow$  सूरदास जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -

(1) सूरसागर

(2) सूरसाशवली

(ख) भाव पक्ष  $\Rightarrow$  सूरदास जी का भाव पक्ष अत्यन्त माधुर्य व कर्मल भावनाओं से युक्त है। इनका भाव पक्ष इस प्रकार है -

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग



(1) बाल वणि ⇒ सूरदास जी का बाल वणि विश्व साहित्य की अनुपम नीधि है।

(2) प्रकृति चित्रण ⇒ कृष्ण की बाल लीलाओं का वणि करते समय इन्होंने विशद रूप में प्रकृति चित्रण किया है।

(3) भाक्ती भावना ⇒ कृष्ण की रचनाएँ भाक्ती भावना से परिपूर्ण हैं। इसमें कृष्ण की भाक्ती निहित है।

(4) सखा भाव ⇒ कृष्ण से सखा का भाव सूरदास की रचनाओं में अलंकार से दर्शने की मिलता है।

कला पक्ष ⇒ सूरदास जी का कला पक्ष भाव पक्ष की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ है।

(1) रस ⇒ सूरदास जी ने अपनी रचनाओं में शान्त रस का अधिक प्रयोग किया है। क्योंकि इन्होंने भाक्ती भाव से परिपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं। मृगारू व करुण रस भी इनके काव्य में हैं।

(2) अलंकार योजना ⇒ सूरदास जी की अलंकार योजना बहुत ही अद्भुत है।

इन्होंने दृष्ट, शौरठा, इप्पय व चौपाई जैसे हों का प्रयोग अपनी रचना में किया है।

(3) अलंकार योजना ⇒ सूरदास जी ने अनुशात, लपक उल्ला, यमक व श्लेष अलंकारों का भी प्रयोग किया है।



(वा) साहित्य में स्थान  $\Rightarrow$  भूरदास जी का  
 ही साहित्य  
 में महत्वपूर्ण स्थान है। कृष्ण की बाल-लीलाओं  
 की काव्य रचनाएँ हिन्दी साहित्य की  
 अनुपम निधि हैं। कृष्ण की लीलाओं का  
 जितना विशद वर्णन भूरदास जी ने किया  
 है उतना विशद आज तक किसी ने  
 नहीं किया। यद्यपि भूरदास जी अंधे थे पर  
 उन्होंने मंत्र की आँखों से कृष्ण की  
 लीलाओं का द्रष्टव्य उसका वर्णन किया  
 है इसलिए भूरदास जी का बालवर्णन  
 अद्भुत है।

B  
S  
E  
M  
P



उत्तर 16 (ब)

(ब) असल प्रकाश

बहादुर

सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत गंधारा हमारी पाठ्य पुस्तक भारती के "तीमिर गीह में किरण आपरण" नामक ललित निबंध से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. श्याम सुंदर दुबे हैं।  
प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गंधारा में जीवन में हुए हुए "सृजन के प्रकाश" का महत्व बताया गया है।

व्याख्या ⇒ लेखक डॉ. श्याम सुंदर दुबे जी कहते हैं कि जीवन का असली प्रकाश ही हमारे अंदर हुआ हुआ है और उस प्रकाश का नाम है - सृजन का प्रकाश। लेखक कहते हैं कि यदि व्याक्ती का आपरण, शील, भ्रम विवेक और और भावना किसी को हू ली तो वह व्याक्ती भी उसी प्रकार प्रकाशित हो जाता है जैसे बल्ल या दीपक के प्रकाश से आस पास का वातावरण प्रकाशित है। यदि हम उस प्रकाशित व्याक्ती के जीवन के गुणों व आदर्शों को गृहण कर लें तो हमारा जीवन भी प्रकाशित हो सकता है।

इस सृजन प्रकाश में इतनी शक्ति है कि यह बड़े-से अंधीरी को तराशकर प्रकाश निरंतर बना देता है अर्थात् कठिनाइयाँ व बाधाओं को हटाकर एक चमकयुक्त आदर्श जीवन प्राप्त

[ योग

+ □ = □

पृष्ठ 20 के अंक

□ = □

कुल अंक



करता है।

विशेष ⇒ (A) गद्य की भाषा सरल, सरल व बोधगम्य है।

(B) गद्य में आशावादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है।

उत्तर ⇒ 17 (अ)

पद्यांश की व्याख्या

(अ) भाई एक लहर ध्रुवतारा है।

सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक भावती के "प्रेम और वास्तव्य" के भाई-बहन से अवतारित है। इसके कवि राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाले श्री गोपाल सिंह नेपाली हैं।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने भाई बहन के प्रेम को राष्ट्रीय प्रेम में परिवर्तित कर प्रस्तुत किया है।

व्याख्या ⇒ कवि गोपाल सिंह नेपाली कहते हैं कि भाई एक लहर बन कर देश की रक्षा करेगा वही तो बहन नहीं की धारा बनकर देश की रक्षा करेगी। जब

B  
S  
E  
M  
P

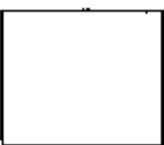


पृष्ठ के अंकों का योग



गंगा सागर से संगम के लिए जाती है  
 तब उसकी धारा उमड़ती है और वह  
 अपने किनारे को डुबो देती है उसी प्रकार  
 बहने भी नदी को धारा बनकर देश के  
 दुश्मनों को डुबो देगी। इस राष्ट्रीय प्रेम  
 व भाव व रक्षा के संघर्ष में सुखम  
 भाई बहने का सहारा है और बहने  
 भाई का सहारा है। अल्हस भाई जिनने  
 अपना जीवन मौजमस्ती में बिता दिया, बहने  
 उसकी धुवतारा है जो अपने लक्ष्य के प्रति  
 सदैव अटल व दृढ़निश्चयी रही है।  
 भाव सौन्दर्य (अ) भाई - बहने कावता में आज  
 गुण की प्रधानता है।

- (2) इसमें देश प्रेम को चित्रित किया गया है।  
 (3) इस कावता में वीर रस की प्रधानता है।



22

59

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 22 के अंक

=

62

कुल अंक



उत्तर = 18

अपठित गंधार

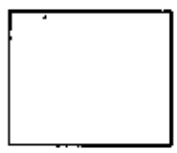
धर्म पालन ही जायेगा

उत्तर = (i) गंधार का उचित शीर्षक है  
धर्मपालन और आत्मा का संबंध

उत्तर = (ii) धर्म का मानव जीवन में विशेष महत्व है यद्यपि उसके पालन में अनेक बाधाएँ आती हैं पर धर्म से आत्मा को शांति और मन को शुद्धि मिलती है।

उत्तर = (iii) धर्म पालन के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निबलता से पड़ती है।

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग

23

67

+

=

66

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 23 के अंक

कुल अंक



उत्तर 19 (अ)

द्वानि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने हेतु

सेवा में,

श्रीमान् जिलाधीश महोदय,

जिला - जबलपुर,

जबलपुर (म.प्र.)।

विषय - परीक्षा काल में द्वानि विस्तारक यंत्रों पर  
सावधान्य लगाने हेतु।

महोदय,

सावधान्य निवेदन है कि मार्च माह का समय  
हमारी परीक्षा काल का समय है जिसके लिए अध्ययन  
हेतु हमें एकाग्रता की आवश्यकता है। परन्तु द्वानि  
विस्तारक यंत्रों द्वारा बाधा उत्पन्न हो रही है जिसके  
कारण हम सभी विद्यार्थियों का अध्ययन कार्य में बाधा  
उत्पन्न हो रही है।

अतः आपसे यह सावधान्य अनुरोध है कि आप  
द्वानि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने की कृपा करें  
दिनांक - 03/03/09

साथी

मा० उ० मा० विद्यालय की

सभी छात्र

जबलपुर (म.प्र.)

4

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग



उत्तर  $\Rightarrow$  20

प्रदूषण : कारण और निदान

प्रदूषण का अर्थ  $\Rightarrow$  प्रदूषण वह तत्व है जिसके द्वारा वायुमण्डल का वातावरण मलिन होता है। प्रदूषकों द्वारा प्रदूषण होता है। यह प्रदूषक तत्व जल, वायु, भूमि में घुलकर वायु को मलिन करता है। प्रदूषण का सबसे बुरा प्रभाव हमारे वातावरण पर पड़ता है जिसके कारण इस प्रदूषण का प्रभाव हम वातावरण में रहने वाले लोगों यानी हम पर पड़ता है। पृथ्वी पर प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है जो शरीर के स्वास्थ्य के लिए खतरा है।

प्रदूषण के कारण  $\Rightarrow$  प्रदूषण अनेक कारणों से होता है। परन्तु

इसके प्रमुख कारण हैं -

- (1) औद्योगिक प्रदूषण  $\Rightarrow$  सबसे अधिक प्रदूषण उद्योगों द्वारा होता है। जो गंधक, पारा, रासायनिक पदार्थों, नाइट्रोज, कार्बनिक व सल्फर में बंधे हुए हैं।
- (2) परिवहन के साधनों द्वारा प्रदूषण को बढ़ावा देना।
- वायुयान आदि परिवहन के साधनों द्वारा

B  
S  
E  
M  
P



पृष्ठ के अंकों का योग

2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

उच्च परीक्षा

हाई स्कूल परीक्षा परीक्षा



परीक्षक के लिये

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगाये

- 1. केन्द्र की सील
- 2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
- 3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील Shrivastava
- 4. केन्द्र क्रमांक 711002
- 6. परीक्षा का नाम हायर सेकेंडरी परीक्षा
- 7. विषय ईन्फ्री 8. माध्यम ईन्फ्री
- 8. दिनांक 12/03/09



पृष्ठ

B  
S  
E  
M  
P

भूमी प्रदूषण होता है / ये प्रदूषण इन माध्यमों द्वारा होता है / यह विषैली गैसों व क्लोरोफ्लोरो कार्बन निकलती है।

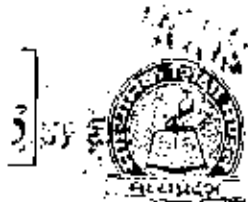
प्रदूषण के प्रकार  $\Rightarrow$  प्रदूषण के प्रमुख प्रकार विंगल है ये प्रदूषण के प्रमुख प्रकार हैं।

(1) जल प्रदूषण  $\Rightarrow$  उद्योगों द्वारा गंदा जल, अपशिष्ट पदार्थ, रासायनिक पदार्थ नदियों, झीलों व तालाबों में बहा दिये जाते हैं इससे कारण जल प्रदूषण होता है। मनुष्यों द्वारा निकली पदार्थों व पदार्थों व गंधों को प्रदूषित कर दिया है।

(2) वायु प्रदूषण  $\Rightarrow$  वायु प्रदूषण के उद्योगों व परिवहन के माध्यमों द्वारा निकली विषैली गैसों द्वारा होता है। वायु प्रदूषण के कारण दूमा, आँसुनास, खाँस, सर्दी, बुखार, आदि रोगों को उत्पन्न करता है। वायु प्रदूषण प्रणाली के लिए अत्यन्त घातक है।



पृष्ठ के अंकों का योग



द्वानि प्रदूषण  $\Rightarrow$  द्वावि विनाश के लिए व  
पाविदुन केसासाधनी का  
द्वानि प्रदूषण हीना है

सासाधनीक प्रदूषण  $\Rightarrow$  मृषुदी ज्वाता बदाने के  
लिए उमरे बाह व  
शासाधनीक पदार्थ से है जिससे यह प्रदूषण हीना  
भूमि प्रदूषण  $\Rightarrow$  भूमि प्रदूषण सासाधनीक  
पदार्थों के भूमि में बहाए  
जाने के कारण होता है

प्रदूषण रोकने के उपाय  $\Rightarrow$  प्रदूषण रोकने के  
लिए निम्न

उपाय किए गए हैं -

1. प्रदूषण विशेष अधिनियम बनाए गए हैं
2. गंदे पानी, सासाधनीक पदार्थ, अपशिष्ट पदार्थ नदियों में न बहाकर जल प्रदूषण रोकना जा सकता है।
3. पाविदुन के साधनी की द्वावि को नियंत्रित करके द्वावि प्रदूषण को रोकना जा सकता है।
4. उद्योगों की धीतनेपों रूपा बनाई जाए जिससे वायु प्रदूषण कम होगा।
5. उबला बदाने के लिए अधिक सासाधनीक पदार्थों का उपयोग न किया जाए।

3

+

=



पहले नुं नुं

नुं 3 के अंक

कुल अंक

B  
S  
E  
M  
P

पुस्तक के अंक का योग

4

+

=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक

B  
S  
E  
M  
P

पृष्ठ के अंकों का योग